C S (M) 2011

Sl. No.

B-DTN-L-QMA

PHILOSOPHY

Paper I

Time Allowed : Three Hours	Maximum Marks : 300

INSTRUCTIONS

Each question is printed both in Hindi and in English.

Answers must be written in the medium specified in the Admission Certificate issued to you, which must be stated clearly on the cover of the answer-book in the space provided for the purpose. No marks will be given for the answers written in a medium other than that specified in the Admission Certificate.

Candidates should attempt Question Nos. ***1*** *and 5 which are compulsory, and any* ***three*** *of the remaining questions selecting at least* ***one*** *question from each Section.*

The number of marks carried by each question is indicated at the end of the question.

ध्यान दें : अनुदेशों का हिन्दी रूपान्तर इस प्रश्न-पत्र के पिछले पृष्ठ पर छपा है।

Section 'A'

1. (a) How does Plato relate the world of ideas to the empirical world ? Discuss. 15

   (b) Why does Descartes not doubt the existence of God ? Explain. 15

   (c) What is Russell's idea of 'Incomplete symbols' in his theory of description ? Discuss. 15

   (d) "I am responsible for myself and for everyone else". Discuss this statement in the light of Sartre's existentialism. 15

2. (a) "Hume aroused me from my dogmatic slumber". In what context Kant has made this statement ? Explain. 20

   (b) Discuss the limitations of verification theory. 20

   (c) What, according to Empiricists is the concept of Substance ? Discuss. 20

3. (a) "Meaning of the word lies in its use". Explain in detail. 30

   (b) What, according to Husserl is Intentionality ? Discuss its role in arriving at the meaning of object. 30

खण्ड 'अ'

1. (अ) प्लेटो प्रत्यय-जगत् को इन्द्रियानुभविक-जगत् से किस प्रकार संबंधित करता है ? विवेचन कीजिये। 15

   (ब) देकार्त ईश्वर के अस्तित्व पर संदेह क्यों नहीं करता है ? व्याख्या कीजिये। 15

   (स) रसेल के विवरण सिद्धांत में 'अपूर्ण प्रतीक' का क्या विचार है ? विवेचन कीजिये। 15

   (द) "मैं स्वयं के प्रति एवं प्रत्येक अन्य के प्रति उत्तरदायी हूँ।" इस कथन का सार्त्र के अस्तित्ववाद के संदर्भ में विवेचन कीजिये। 15

2. (अ) "ह्यूम ने मुझे मताग्रही-निद्रा से जगा दिया।" काण्ट ने किस संदर्भ में यह कथन कहा था ? विवेचन कीजिये। 20

   (ब) सत्यापन सिद्धांत की सीमाओं का विवेचन कीजिये। 20

   (स) अनुभववादियों के अनुसार द्रव्य की क्या अवधारणा है ? विवेचना कीजिये। 20

3. (अ) "शब्द का अर्थ उसके प्रयोग में निहित होता है।" विस्तार से समझाइये। 30

   (ब) हुसर्ल के अनुसार विषयापेक्षा क्या है ? विषय के अर्थ तक पहुँचने में इसकी क्या भूमिका है ? 30

4. (a) Are the arguments given by G. E. Moore against Idealism, adequate ? Give reasons for your answer. 30

(b) Is the concept of freedom consistent with the theory of determinism of Spinoza ? Support your answer with arguments. 30

Section 'B'

5. (a) What according to Jainism is Path to Liberation ? Discuss. 15

(b) Is Śūnyavāda a philosophical doctrine ? Evaluate. 15

(c) Do you find any inadequacy in the proofs for the existence of God as given by Naiyāyikas ? Give reasons in support of your answer. 15

(d) Why do the Vaiśeṣikas treat Abhāva as an independent category ? Explain. 15

6. (a) Why is Saptabhaṅgi Naya not treated as a doctrine of Scepticism ? Discuss. 20

(b) How do Mīmāṃsakas defend Svataḥ Prāmāṇyavāda against the Naiyāyika criticism ? Discuss. 20

(c) What is the importance of the Buddhist concept of 'Nāma-Rūpa' in the exposition of the Doctrine of Dependent Origination ? 20

4. (अ) प्रत्ययवाद के विरुद्ध जी. ई. मूर के द्वारा दिये गये तर्क क्या पर्याप्त हैं ? स्वयं के उत्तर के लिये कारण दीजिये। 30

(ब) स्पिनोज़ा के नियतवाद के सिद्धांत के साथ क्या स्वतंत्रता की अवधारणा संगत है ? अपने उत्तर के समर्थन में तर्क दीजिये। 30

खण्ड 'ब'

5. (अ) जैनदर्शन के अनुसार मोक्ष मार्ग क्या है ? विवेचन कीजिये। 15

(ब) क्या शून्यवाद एक दार्शनिक सिद्धांत है ? मूल्यांकन कीजिये। 15

(स) नैयायिकों द्वारा ईश्वर के अस्तित्व के पक्ष में दिये गये तर्कों में क्या आप कोई अपूर्णता पाते हैं ? अपने उत्तर के समर्थन में कारण दीजिये। 15

(द) वैशेषिक दार्शनिक अभाव को एक स्वतंत्र पदार्थ क्यों मानते हैं ? समझाइये। 15

6. (अ) सप्तभंगी नय को एक संदेहवादी सिद्धांत क्यों नहीं माना जाता है ? विवेचन कीजिये। 20

(ब) नैयायिकों की आलोचना से मीमांसक स्वतः प्रामाण्यवाद की रक्षा कैसे करते हैं ? विवेचन कीजिये। 20

(स) प्रतीत्यसमुत्पाद के प्रतिपादन में 'नाम-रूप' की बौद्धमतीय अवधारणा का क्या महत्व है ? 20

7. (a) Examine Sāṅkhya's arguments for Bahu-puruṣavāda (plurality of Puruṣa). 30

(b) "Yoga is more than a psycho-physical exercise". Analyse this statement and support your conclusion with arguments. 30

8. (a) Why do Cārvākas reject the concept of Ākāśa. Discuss. 30

(b) Is the concept of Nirvāṇa a logical necessity for the Buddhists ? Give reasons for your answer. 30

7. (अ) सांख्य दर्शन के बहुपुरुषवाद के समर्थक तर्कों की परीक्षा कीजिये। 30

(ब) "योग मनो-भौतिक व्यायाम से अधिक है।" इस कथन का विश्लेषण कीजिये एवं अपने निष्कर्ष के समर्थन में तर्क दीजिये। 30

8. (अ) चार्वाक आकाश की अवधारणा का खंडन क्यों करते हैं ? विवेचन कीजिये। 30

(ब) बौद्धों के लिए निर्वाण की अवधारणा क्या एक तार्किक आवश्यकता है ? स्वयं के उत्तर के समर्थन में कारण दीजिये। 30

B-DTN-L-QMA

दर्शनशास्त्र

प्रश्न-पत्र I

समय : तीन घण्टे | पूर्णांक : 300

अनुदेश

प्रत्येक प्रश्न हिन्दी और अंग्रेजी दोनों में छपा है।

प्रश्नों के उत्तर उसी माध्यम में लिखे जाने चाहिए जिसका उल्लेख आपके प्रवेश-पत्र में किया गया है, और इस माध्यम का स्पष्ट उल्लेख उत्तर-पुस्तक के मुख-पृष्ठ पर अंकित निर्दिष्ट स्थान पर किया जाना चाहिए। प्रवेश-पत्र पर उल्लिखित माध्यम के अतिरिक्त अन्य किसी माध्यम में लिखे गए उत्तर पर कोई अंक नहीं मिलेंगे।

*प्रश्न संख्या 1 और 5 अनिवार्य हैं। बाकी प्रश्नों में से प्रत्येक खण्ड से कम-से-कम एक प्रश्न चुनकर किन्हीं **तीन** प्रश्नों के उत्तर दीजिए।*

प्रत्येक प्रश्न के लिए नियत अंक प्रश्न के अन्त में दिए गए हैं।

***Note :** English version of the Instructions is printed on the front cover of this question paper.*